

दानियेल की पुस्तक - संख्या छह

यहोयाकीम

Jeff Pippenger

2023-12-01

दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक ही पुस्तक हैं, उसी अर्थ में जैसे बाइबल एक ही पुस्तक है, जिसमें पुराना नियम और नया नियम सम्मिलित हैं।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का इतिहास, पुराने नियम में निहित प्रमाणों के बिना पूर्णतः सिद्ध नहीं किया जा सकता। मसीह पुराने नियम में उतनी ही स्पष्टता से प्रकट हैं जितनी नए नियम में। एक आने वाले उद्धारकर्ता की गवाही देता है, जबकि दूसरा उस उद्धारकर्ता की गवाही देता है जो भविष्यद्वक्ताओं ने जिस प्रकार भविष्यवाणी की थी, उसी प्रकार आ चुका है। उद्धार की योजना को समझने के लिए पुराने नियम के शास्त्रों को भली-भांति समझना आवश्यक है। भविष्यद्वक्ताओं के अतीत से आने वाली महिमामय ज्योति ही मसीह के जीवन और नए नियम की शिक्षाओं को स्पष्टता और सौंदर्य के साथ उजागर करती है। यीशु के चमत्कार उनकी दिव्यता का प्रमाण हैं; परंतु कि वे संसार के उद्धारकर्ता हैं, इसके सबसे प्रबल प्रमाण पुराने नियम की भविष्यवाणियों की तुलना नए नियम के इतिहास से करने पर मिलते हैं। यीशु ने यहूदियों से कहा, 'पवित्र शास्त्रों की खोज करो; क्योंकि तुम समझते हो कि उनमें तुम्हारे लिए अनन्त जीवन है, और वे ही मेरी गवाही देते हैं।' उस समय पुराने नियम के सिवा और कोई शास्त्र अस्तित्व में नहीं था; इसलिए उद्धारकर्ता की यह आज्ञा स्पष्ट है। Spirit of Prophecy, खंड 3, 211.

मसीह कौन हैं और क्या हैं, इसका सबसे ठोस प्रमाण तब मिलता है जब पुराने नियम की भविष्यवाणियों की तुलना नए नियम के इतिहास में उन भविष्यवाणियों की पूर्ति से की जाती है। इसी प्रकार, दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों के संबंध में भी।

प्रकाशितवाक्य में बाइबल की सभी पुस्तकें मिलती और समाप्त होती हैं। यहाँ दानियेल की पुस्तक का पूरक है। एक भविष्यवाणी है; दूसरी प्रकाशना है। प्रेरितों के काम, 585.

शब्द "complement" का अर्थ है किसी चीज़ को परिपूर्ण करना। पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति मसीह की "दिव्यता" का "सबसे प्रबल" "प्रमाण" थी। दानियेल की पुस्तक की भविष्यवाणियों की दिव्यता का सबसे प्रबल प्रमाण, उन भविष्यवाणियों की वह पूर्ति है जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्शाई गई है। दानियेल की भविष्यवाणियाँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जारी रहती हैं, और वे अंतिम दिनों में परिपूर्णता तक पहुँचाई जाती हैं, जब यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहर खोली जाती है।

“प्रकाशितवाक्य एक मुहरबंद पुस्तक है, परन्तु यह एक खुली हुई पुस्तक भी है। इसमें वे अद्भुत घटनाएँ दर्ज हैं जो इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में घटित होने वाली हैं। इस पुस्तक की शिक्षाएँ स्पष्ट और सुस्पष्ट हैं; वे न तो रहस्यमयी हैं और न ही असमझनीय। इसमें वही भविष्यवाणी की श्रृंखला उठाई गई है जो दानियेल में है। कुछ भविष्यवाणियों को परमेश्वर ने दोहराया है, और इस प्रकार यह दर्शाया है कि उन्हें महत्त्व दिया जाना चाहिए। प्रभु वे बातें नहीं दोहराते जिनका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता।” Manuscript Releases, खंड 9, 8.

यहूदा के राजा यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर आया और उस पर घेरा डाल दिया। दानियेल 1:1.

दानियेल की पुस्तक की पहली आयत, जब ठीक से विचार किया जाए, तो भविष्यसूचक जानकारी का अपार भंडार समेटे हुए है। हम अपनी चर्चा की शुरुआत यहोयाकीम से करेंगे।

यहोयाकीम यहूदा के अंतिम तीन राजाओं में पहला था। इसलिए वह पहले स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। उसका पुत्र यहोयाकीन, जिसे येकन्याह या कन्याह भी कहा जाता था, दूसरे स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता था। यहोयाकीन के बाद सिदकिय्याह आया, जो यहूदा के इन अंतिम तीन राजाओं में सबसे अंतिम था। सिदकिय्याह तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। कई भविष्यसूचक साक्ष्य यह पुष्टि करते हैं कि यहोयाकीम पहले स्वर्गदूत के संदेश का प्रतीक है। इन प्रमाणों को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि दानिय्येल के पहले अध्याय की पहली आयत पहले स्वर्गदूत के संदेश की ओर संकेत करती है; और यह तथ्य एक लंगर के समान है, जिसके कारण पहले अध्याय को प्रकाशितवाक्य चौदह के पहले स्वर्गदूत के संदेश के रूप में समझा जा सकता है। हम 2 इतिहास से आरंभ करेंगे।

और जो तलवार से बच निकले थे, उन्हें वह बाबुल ले गया; जहाँ वे उसके और उसके पुत्रों के दास बने रहे, जब तक फारस के राज्य का राज्यकाल आया; यहोवा के उस वचन को पूरा करने के लिए, जो यिर्मयाह के मुख से कहा गया था, कि देश अपने सब्तों का विश्राम पा ले; क्योंकि जितने समय तक वह उजाड़ पड़ा रहा, उसने सब्त माना, ताकि सत्तर वर्ष पूरे हों। 2 इतिहास 36:20, 21.

बाबुल में सत्तर वर्षों की बंधुआई इसलिए हुई कि भूमि अपने सब्तों का वह विश्राम पा सके जो लैव्यव्यवस्था पच्चीस के अनुसार पूरे नहीं किए गए थे। सब्त-वर्षों के सत्तर वर्ष कुल चार सौ नब्बे वर्षों के बराबर होते हैं, जिनमें प्राचीन इस्राएल ने लैव्यव्यवस्था पच्चीस के निर्देशों की उपेक्षा की थी। बंधुआई के सत्तर वर्षों से पहले चार सौ नब्बे वर्षों तक विद्रोह चलता रहा। उन चार सौ नब्बे वर्षों के अंत में, तीन राजाओं को नबुकदनेस्सर के अधीन कर दिया जाएगा।

सत्तर वर्षों के निर्वासन के अंत में, प्रभु ने कुरूश को उठाया, जो उन तीन राजाओं में पहला था जिन्होंने यह फरमान दिया कि इस्राएल लौटकर यरूशलेम का पुनर्निर्माण कर सकता है। अर्तक्षत्र उन तीनों में तीसरा था और उसने 457 ईसा पूर्व में तीसरा फरमान जारी किया। तीसरे फरमान से दानिय्येल की पुस्तक के अध्याय 8, पद 14 में बताया गए 2300 वर्षों की अवधि का आरम्भ हुआ। 1798 में रोष की पहली समाप्ति हुई, दानिय्येल की पुस्तक की मुहर खोली गई और तीन स्वर्गदूतों में से पहला आ पहुँचा। तीसरा स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आ पहुँचा।

यहूदा के अंतिम तीन राजाओं का सामना नबुकदनेस्सर से हुआ, और यहोयाकीम के बंदी बनाए जाने पर सत्तर वर्षों की अवधि आरंभ हुई। यह अवधि तब तक जारी रही जब तक बाबेल नष्ट नहीं हो गया, और वह सेनापति (कुरूश) जिसने बाबेल को नष्ट किया, और जो शीघ्र ही उसके बाद राजा बना, ने तीन फरमानों में से पहला जारी किया। तीसरे फरमान से सांझ और भोर की वह भविष्यवाणी शुरू हुई, जो तीन स्वर्गदूतों में से तीसरे के आगमन के साथ समाप्त हुई। मसीह हमेशा अंत को आरंभ से जोड़ते हैं।

सत्तर वर्षों की शुरुआत यरूशलेम पर नबुकदनेस्सर के पहले आक्रमण के साथ हुई। सत्तर वर्षों का अंत बाबुल के विनाश से चिन्हित हुआ। यरूशलेम का अंतिम और पूर्ण विनाश उन तीन राजाओं में से तीसरे के समय आया, जिन तीनों पर नबुकदनेस्सर ने आक्रमण किया था। यरूशलेम का विनाश क्रमिक था। इस अर्थ में कि उन सब पर नबुकदनेस्सर ने आक्रमण किया था, अंतिम तीन राजा एक ही भविष्यसूचक प्रतीक का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे तीन फरमानों के प्रतिरूप थे, जो सब मिलकर एक ही प्रतीक थे, जैसे तेईस सौ दिनों के अंत में तीन स्वर्गदूत एक ही प्रतीक थे।

“एज्रा के सातवें अध्याय में वह राजाज्ञा पाई जाती है। पद 12-26। अपने सर्वाधिक पूर्ण रूप में वह 457 ईसा पूर्व में फारस के राजा अर्तक्षत्र के द्वारा जारी की गई थी। परन्तु एज्रा 6:14 में कहा गया है कि यरूशलेम में यहोवा का भवन ‘कुरूश, और दारयावेश, और फारस के राजा अर्तक्षत्र की आज्ञा [हाशिये में, “राजाज्ञा”] के अनुसार’ बनाया गया था। इन तीनों राजाओं ने, उस राजाज्ञा का आरम्भ करने, उसे पुनः पुष्टि देने, और उसे पूर्ण करने के द्वारा, उसे उस सिद्धता तक पहुँचाया जिसकी भविष्यवाणी के अनुसार 2300 वर्षों के आरम्भ को चिह्नित करने के लिए आवश्यकता थी। 457 ईसा पूर्व को, अर्थात् उस समय को जब वह राजाज्ञा पूर्ण हुई, उस आज्ञा की तिथि मान लेने पर, सत्तर सप्ताहों के विषय में भविष्यवाणी की प्रत्येक विशिष्ट बात पूरी हुई हुई देखी

गई।" The Great Controversy, 326.

सिस्टर व्हाइट बताती हैं कि भविष्यवाणी की पूर्णता के लिए तीन आदेश आवश्यक थे। वह उनके आपसी संबंध को परिभाषित करती हैं, और ऐसा करते हुए इब्रानी शब्द "सत्य" की व्याकरणिक विशेषताओं की पहचान करती हैं। वह कहती हैं कि पहले आदेश ने आरम्भ किया, दूसरे आदेश ने पुनः पुष्टि की, और तीसरे आदेश ने "सत्तर सप्ताह" संबंधी भविष्यवाणी में उल्लिखित हर बात को पूरा किया। इब्रानी शब्द "सत्य" इब्रानी वर्णमाला के प्रथम, तेरहवें और अंतिम अक्षरों के संयोजन से बनता है। पहले आदेश ने आरम्भ किया, दूसरे ने पुनः पुष्टि की, और अंतिम आदेश ने भविष्यवाणी को पूरा किया। इन तीन आदेशों में अल्फा और ओमेगा की छाप निहित है, और वे बाबुल की बंधुआई के सत्तर वर्षों की भविष्यवाणी के अंत में पूरे हुए, हालाँकि तीसरा आदेश उन सत्तर वर्षों के समाप्त होने के काफी बाद आया। ये तीनों आदेश क्रमिक थे, और यद्यपि वे तीन आदेश थे, फिर भी वे एक ही भविष्यवाणी का प्रतीक थे।

पहला स्वर्गदूत 1798 में आया, दूसरा स्वर्गदूत 1844 के वसंत में आया, और तीसरा स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आया। वे तीनों स्वर्गदूत एक भविष्यसूचक प्रतीक हैं, जो प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के अनन्त सुसमाचार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

"पहला और दूसरा संदेश 1843 और 1844 में दिए गए थे, और हम अब तीसरे संदेश की घोषणा के अधीन हैं; परंतु इन तीनों संदेशों की घोषणा अभी भी की जानी है। सत्य की खोज करने वालों को उन्हें दोहराना आज भी उतना ही आवश्यक है जितना पहले कभी था। कलम और वाणी द्वारा हमें यह घोषणा करनी है, उनके क्रम को, और उन भविष्यवाणियों के अनुप्रयोग को दिखाते हुए जो हमें तीसरे स्वर्गदूत के संदेश तक ले आती हैं। पहले और दूसरे के बिना तीसरा हो ही नहीं सकता। ये संदेश हमें विश्व को प्रकाशनों में, प्रवचनों में देने हैं, भविष्यवाणी के इतिहास की रेखा में वे बातें दिखाते हुए जो हो चुकी हैं और जो होने वाली हैं।" चयनित संदेश, पुस्तक 2, 104, 105.

यहूदा के अंतिम तीन राजा एक प्रतीक थे, क्योंकि वे सभी बाबुल के राजा द्वारा विभिन्न स्तरों की अधीनता में लाए गए थे। यहूदा के अंतिम तीन राजा, तीन फरमान और तीन स्वर्गदूत—यद्यपि स्पष्ट रूप से तीन हैं—भी एक ही भविष्यवाणी के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

आखिरी तीन राजा उस भविष्यवाणी-संदर्भ का हिस्सा हैं, जिससे बंदीवास के सत्तर वर्षों की भविष्यवाणी प्रारंभ होती है, और इस प्रकार वे उस आरंभ का भाग बनते हैं जो बंदीवास के सत्तर वर्षों के अंत को दर्शाता है। बंदीवास की शुरुआत तीन राजाओं को क्रमशः अधीन करने से हुई और इसका अंत राज्य तथा उसकी राजधानी के विनाश पर हुआ। भविष्यवाणी का अंत बाबुल राज्य और उसकी राजधानी के विनाश को चिह्नित करता है, जो तीन क्रमिक फ़रमानों के आगमन का भी संकेत देता है। तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी की शुरुआत तीन क्रमिक फ़रमानों से चिह्नित है, और यह तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी के उस अंत को दर्शाती है, जो तीन क्रमिक संदेशों से मिलकर बना है।

तीन स्वर्गदूत और उनके-अपने तीन संदेशों को, तीन राजाओं और उनके तीन क्रमिक फरमानों द्वारा प्रतीकित किया गया था। जिन तीन राजाओं ने अपने-अपने तीन फरमानों की घोषणा की थी, वे तीन क्रमिक राजाओं द्वारा प्रतीकित किए गए थे, जिन्होंने प्रत्येक ने नबुकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह का अपना संदेश प्रस्तुत किया था। विद्रोह के तीन संदेशों ने तीन फरमानों का प्रतीक किया, और वे फरमान आगे चलकर तीन संदेशों का प्रतीक बने। उनमें से एक सत्तर वर्षों की भविष्यवाणी का आरंभ करता है, जो आगे चलकर तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी के आरंभ पर समाप्त होती है, जो 1844 में तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर समाप्त होती है। भूमि को अपने सब्त का आनंद लेने के लिए जो सत्तर वर्ष दिए गए थे, उन्हें 22 अक्टूबर, 1844 से अलग नहीं किया जा सकता।

यहोयाकीम, कुरुश के पहले फ़रमान का तथा प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के पहले स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अतिरिक्त, तीन गवाह—यहूदा के अंतिम तीन राजा, तीन फ़रमान और तीन स्वर्गदूतों के

संदेश—यहोयाकीम के प्रतीक के विषय में सटीक जानकारी प्रदान करते हैं, क्योंकि तीनों स्वर्गदूतों का भविष्यवाणी संबंधी इतिहास दैवीय प्रेरणा द्वारा बहुत सावधानी से चिह्नित किया गया है। इन तीनों संदेशों का पहले एक ऐतिहासिक आगमन होता है और उसके बाद एक ऐतिहासिक शक्ति-वृद्धि होती है।

पहला स्वर्गदूत 1798 में आया, और 11 अगस्त, 1840 को दिन-प्रति-वर्ष सिद्धांत की पुष्टि के साथ वह सशक्त हुआ।

"1840 के वर्ष में भविष्यवाणी की एक अन्य उल्लेखनीय पूर्ति ने व्यापक रुचि उत्पन्न की। दो वर्ष पूर्व, मसीह के द्वितीय आगमन का प्रचार करने वाले अग्रणी उपदेशकों में से एक, जोसियाह लिच ने प्रकाशित-वाक्य 9 की एक व्याख्या प्रकाशित की, जिसमें ओटोमन साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी की गई थी। उसकी गणनाओं के अनुसार, यह शक्ति ... 11 अगस्त, 1840 को उखाड़ फेंकी जानी थी, जब कॉन्स्टैंटिनोपल में ओटोमन शक्ति के टूटने की अपेक्षा की जा सकती थी। और यह, मेरा विश्वास है, यही बात सिद्ध पाई जाएगी।"

"ठीक उसी निर्दिष्ट समय पर, तुर्की ने अपने राजदूतों के माध्यम से यूरोप की मित्र शक्तियों के संरक्षण को स्वीकार किया, और इस प्रकार अपने को मसीही राष्ट्रों के नियंत्रण के अधीन कर दिया। यह घटना उस भविष्यवाणी की अक्षरशः पूर्ति थी। जब यह बात ज्ञात हुई, तो असंख्य लोग मिलर और उनके सहकर्मियों द्वारा अंगीकार किए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता के प्रति विश्वस्त हो गए, और आगमन आंदोलन को एक अद्भुत प्रोत्साहन मिला। विद्वत्ता और प्रतिष्ठा वाले पुरुष मिलर के साथ, उनके विचारों का उपदेश देने और उनके प्रकाशन—दोनों में—सम्मिलित हो गए, और 1840 से 1844 तक यह कार्य तीव्र गति से विस्तृत हुआ।" महान संघर्ष, 334, 335.

पहला स्वर्गदूत 1798 में न्याय के उद्घाटन की घोषणा करता हुआ आया, पर यह संदेश विलियम मिलर की इस पहचान की वैधता पर आधारित था कि बाइबल की भविष्यवाणी में एक दिन एक वर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। उस सिद्धांत की पुष्टि "11 अगस्त, 1840" को हुई, और पहले संदेश को बल मिला। बाइबल के वर्ष 1843, जो 1844 तक बढ़ा, में मसीह की वापसी की भविष्यवाणी असफल होने पर, प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह का दूसरा स्वर्गदूत आ पहुँचा। 1844 के वसंत में भविष्यवाणी के विफल होने पर, प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं ने मिलर के "एक दिन बराबर एक वर्ष" के नियम को अस्वीकार कर दिया और बाबुल की बेटियाँ बन गईं। इसके बाद 1844 की गर्मियों में, जब उसमें "आधी रात की पुकार" के संदेश का साथ जुड़ा, तो उस संदेश को बल मिला। 22 अक्टूबर, 1844 को "आधी रात की पुकार" के संदेश की पूर्ति के साथ, तीसरा स्वर्गदूत अपना संदेश लेकर आ पहुँचा।

1863 में लाओदिकियाई एडवेंटवाद की अवज्ञा के कारण, परमेश्वर के लोगों को प्राचीन इस्राएल के जंगल में भटकने के इतिहास को दोहराने के लिए ठहराया गया। तीसरे संदेश का सामर्थ्य-प्रदान 11 सितंबर, 2001 तक स्थगित रहा। तीनों में से प्रत्येक संदेश इतिहास में प्रकट होता है और उसके बाद उसे सामर्थ्य प्रदान किया जाता है।

यहोयाकीम और कुरूश प्रथम स्वर्गदूत के सशक्तिकरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके आगमन का नहीं। यद्यपि यहोयाकीम यहूदा के अंतिम तीन राजाओं में प्रथम था, और यद्यपि वह प्रथम स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता है, तो भी वे भविष्यसूचक विशेषताएँ जो वह, और साथ ही कुरूश, प्रदर्शित करते हैं, यह दिखाती हैं कि वे दोनों प्रथम स्वर्गदूत के सशक्तिकरण के प्रतीक हैं, न कि प्रथम स्वर्गदूत के आगमन के प्रतीक। यहोयाकीम के इतिहास में प्रथम संदेश का आगमन मनश्शे था, जो यहूदा के अंतिम सात राजाओं में प्रथम था।

यरूशलेम के पूर्ण और अंतिम विनाश से पहले सात राजा थे। वे सात राजा एक प्रगतिशील इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे 1798 से 1844 तक का वह इतिहास जिसका वे प्रतिरूप थे। प्रथम स्वर्गदूत 1798 में आया, और तृतीय स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को आया। 1798 से 1844 तक का इतिहास प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों का इतिहास है। तृतीय स्वर्गदूत का इतिहास 1844 में शुरू हुआ। जब सीस्टर व्हाइट प्रकाशितवाक्य के अध्याय दस की सात गर्जनाओं के प्रतीकवाद की पहचान करती हैं, तो वह कहती हैं कि वे सात गर्जनाएँ प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं, पर तृतीय स्वर्गदूत का नहीं।

यूहन्ना को दिया गया विशेष प्रकाश, जो सात गर्जनाओं में व्यक्त किया गया था, उन घटनाओं का निरूपण था जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित होने वाली थीं। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, पृष्ठ 971।

प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के सात गर्जन का इतिहास 11 अगस्त, 1840 को पहले स्वर्गदूत के सशक्तिकरण से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 की महान निराशा तक के इतिहास पर बल देता है, परंतु इसके बावजूद इसमें पहले और दूसरे स्वर्गदूत का संपूर्ण इतिहास भी शामिल है। सात गर्जन का सामान्य अर्थ यह है कि वह 1798 से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक का प्रतिनिधित्व करता है। 1798 से महान निराशा तक पहले स्वर्गदूत के आगमन का इतिहास ही पहले और दूसरे स्वर्गदूत का इतिहास है, और भविष्यसूचक रूप से इसे सात गर्जन के रूप में दर्शाया गया है। सात गर्जन का प्रतिरूप यहूदा के अंतिम सात राजाओं में भी मिलता है। उन राजाओं में से अंतिम तीन केवल क्रम में आने वाले राजाओं की पहचान भर नहीं थे, बल्कि वे मिलकर प्रथम, मध्य और अंतिम से बना एक ही प्रतीक हैं।

तीन स्वर्गदूतों के इतिहास में, पहले संदेश को 11 अगस्त, 1840 को सशक्त किया गया, और यहोयाकीम तथा कुरूश दोनों उस घटना के प्रतिरूप थे।

हम अगले लेख में इन सबसे महत्वपूर्ण सत्यों की पहचान करना जारी रखेंगे।

हर विद्यार्थी को अटल सत्यनिष्ठा को संजोना चाहिए। हर मन को परमेश्वर के प्रकट वचन की ओर श्रद्धापूर्ण ध्यान से मुड़ना चाहिए। जो इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, उन्हें ज्योति और अनुग्रह दिया जाएगा। वे उसकी व्यवस्था में से अद्भुत बातें देखेंगे। महान सत्य, जो पेन्टेकोस्ट के दिन से अनदेखे और उपेक्षित पड़े हैं, परमेश्वर के वचन से अपनी मूल पवित्रता में चमकने वाले हैं। जो सचमुच परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा वे सत्य प्रकट करेगा जो मन से फीके पड़ गए हैं, और वे सत्य भी प्रकट करेगा जो बिल्कुल नए हैं। जो परमेश्वर के पुत्र का मांस खाते और उसका लहू पीते हैं, वे दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों में से वह सत्य लाएंगे जो पवित्र आत्मा से प्रेरित है। वे ऐसी शक्तियों को क्रियाशील कर देंगे जिन्हें दबाया नहीं जा सकता। बच्चों के होंठ खुलेंगे ताकि वे उन भेदों की घोषणा करें जो मनुष्यों के मन से छिपे रहे हैं। प्रभु ने इस संसार की मूर्ख समझी जाने वाली चीज़ों को बुद्धिमानों को लज्जित करने के लिए, और संसार की निर्बल चीज़ों को शक्तिशालियों को लज्जित करने के लिए चुन लिया है।

बाइबल को हमारी पाठशालाओं में इस तरह नहीं लाया जाना चाहिए कि उसे अविश्वास के बीच-बीच में ढूँस दिया जाए। बाइबल को शिक्षा का आधार और विषय-वस्तु बनाया जाना चाहिए। यह सच है कि हम जीवित परमेश्वर के वचन के बारे में पहले से कहीं अधिक जानते हैं, पर अभी भी सीखने के लिए बहुत कुछ शेष है। उसे जीवित परमेश्वर के वचन के रूप में ही प्रयुक्त किया जाए, और हर बात में उसे प्रथम, अंतिम और सर्वोत्तम समझकर आदर दिया जाए। तब सच्ची आत्मिक वृद्धि दिखाई देगी। विद्यार्थी स्वस्थ धार्मिक चरित्र विकसित करेंगे, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र की देह खाते और उसका लहू पीते हैं। परन्तु यदि देखभाल और पोषण न मिले, तो आत्मा का स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है। प्रकाश की धारा में बने रहो। बाइबल का अध्ययन करो। जो परमेश्वर की निष्ठापूर्वक सेवा करते हैं, वे आशीषित होंगे। वह जो किसी भी निष्ठावान कार्य को बिना प्रतिफल के नहीं रहने देता, वह निष्ठा और सत्यनिष्ठा के हर कार्य को अपने प्रेम और स्वीकृति के विशेष चिन्हों से अलंकृत करेगा। रिव्यू एंड हेराल्ड, 17 अगस्त, 1897.